इस्लामी पहनावा (3 का भाग 1)

रेटिंग: TOP20

विवरण: ?? ??? ??? ?? ????? ?? ???? ??????? ?? ??????? ?? ??????? ????? ?? ?????? ?? ???? ??? ???????? ?? ??????? ?????? ?? ???????? ?? ?? ????? ?????? ?? ??????? ?? ???? ?? ???? ?? ????? ???? ??? ??? ???? ?? ?? ?????? ??????? ?? ???? ???? ???

श्रेणी: पाठ › इस्लामी जीवन शैली, नैतिकता और व्यवहार › ड्रेस कोड

द्वारा: Aisha Stacey (© 2012 IslamReligion.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

पाठ का उद्देश्य:

पुरुषों और महिलाओं दोनों के पहनावे की शर्तों को जानना और समझना।

अरबी शब्द:

- *?????* - शरीर के वे अंग जिन्हें ढक कर रखना चाहिए।
- *????* - वह व्यक्ति जो खून, विवाह या स्तनपान से किसी दूसरे व्यक्ति से संबंधित हो, चाहे पुरुष हो या महिला। किसी महिला/पुरुष को उसके पिता/माता, भतीजे/भतीजी, चाचा/चाची, आदि से शादी करने की अनुमति नहीं है।
- *???* - प्राकृतिक या अंतर्निहित शर्म और विनय की भावना।
- *?????* - हिजाब शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हैं, जिनमें छुपाना, छुपना और पर्दा शामिल हैं। यह आमतौर पर एक महिला के हेडस्कार्फ़ को संदर्भित करता है और व्यापक रूप से मामूली कपड़ों और व्यवहार को संदर्भित करता है।

इस्लाम जीवन जीने का एक संपूर्ण तरीका है, प्रत्येक पहलू को हमारे निर्माता ने खुश और स्वस्थ समुदायों को आगे बढ़ाने और स्वर्ग में शाश्वत आनंद के मार्ग को आसान बनाने के लिए बनाया है। आज के समाज में शालीनता को कमजोरी या असुरक्षा की निशानी माना जाता है। इस्लाम में ऐसा नहीं है, यहां शालीनता को अपने और दूसरों का सम्मान माना जाता है। जिस हया के साथ हर इंसान पैदा होता है उसे क़ीमती चीज़ समझा जाता है। इसलिए इस्लाम में महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए पहनावे का नियम है। इसका उद्देश्य समग्र रूप से समाज की रक्षा करना और मामूली पहनावे और व्यवहार को बढ़ावा देना है। यह लिंगों के बीच एक पर्दा बनाता है और हमें अपने जीवन को मर्यादा, सम्मान और आदर के साथ जीने के योग्य बनाता है।

इस्लाम में महिलाओं को बहुत सम्मान दिया जाता है और पर्दा करने के इस्लामी नियमों का उद्देश्य उनकी गरिमा और सम्मान की रक्षा करना है। पर्दा करने के संबंध में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द हिजाब है। इस्लाम के इतिहास में सभी योग्य मुस्लिम विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पहनावे की शर्तों को पूरा करना सभी मुस्लिम पुरुषों और महिलाओं का दायित्व है। उन्होंने इन शर्तों को क़ुरआन और सुन्नत में मिले सबूतों पर आधारित किया है। नीचे हिजाब के विषय में क़ुरआन के सबसे प्रसिद्ध छंदो और पैगंबर मुहम्मद का सबसे प्रसिद्ध कथन है।

“ऐ पैगंबर! कह दो अपनी पत्नियों, अपनी पुत्रियों और आस्तिको की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। ये अधिक समीप है कि वे पहचान ली जायें (स्वतंत्र आदरणीय महिला के रूप में)। फिर उन्हें दुःख न दिया जाये और अल्लाह अति क्षमि, दयावान् है। (क़ुरआन 33:59)

और विश्वासी स्त्रियों से कहें कि अपनी आंखे नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (पापों से) और अपनी शोभा और गहनों का प्रदर्शन न करें, सिवाय उसके जो दिखाई दे... (क़ुरआन 24:31)

?? ????? ????? ???? ?? ???? ?? ????? ???? ??, ?? ?? ???? ???? ?? ?? ???? ?? ???? ????? ??? ?? ???? ?????????? ?? ????? ?? ????? ?? ?? ????? ?? ?? ??????[1]

महिला का हिजाब

हजिाब का उद्देश्य अवराह को ढंकना है और अवराह अलग-अलग स्थतियिों में और लोगों के वभिनि्न समूहों मे अलग होता है।

हम सार्वजनकि रूप से और गैर- महरम पुरुषों के बीच एक महलिा के लएि हजिाब पहनने की शर्तों से शुरू करते हैं। इन शर्तो को पूरा करने के बाद, महलिा जो चाहे वह पहन सकती है।

1.हजिाब (आवरण) चेहरे और हाथों को छोड़कर पूरे शरीर को ढकने वाला होना चाहएि।

2.यह पारदर्शी या टाइट नहीं होना चाहएि। टाइट कपड़े भले ही त्वचा के रंग को छपिाते हैं, लेकनि फरि भी ये शरीर या उसके भाग के माप और आकार को दखिाते हैं, और सुस्पष्ट चति्र बनाते हैं।

3.यह वपिरीत लगिं का ध्यान आकर्षति करने वाला नहीं होना चाहएि; इसलएि यह असाधारण या अत्यधकि भव्य नहीं होना चाहएि। न ही ज्वैलरी और मेकअप दखिना चाहएि।

4.यह घमंड या लोकप्रयिता या प्रसदि्धि पाने के लएि पहना जाने वाला वस्त्र नहीं होना चाहएि। पैगंबर की महलिा साथी काले और अन्य गहरा रंग पहनती थीं लेकनि अन्य रंगों को पहनने की भी अनुमति है; एक महलिा को घमंड के कारण रंगीन कपड़े नहीं पहनने चाहएि।

5.इसमें परफ्यूम नहीं लगाना चाहएि। यह नषिेध शरीर और वस्त्र दोनों पर लागू होता है।

6.यह पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों से मलिता-जुलता नहीं होना चाहएि।

7.यह गैर-मुस्लमिों के वशिषि्ट कपड़ों से मलिता-जुलता नहीं होना चाहएि।

पुरुषों का पहनावा

आप वशि्वासयिों से कहें कि अपनी आंखे नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (पापों से)। ये उनके लएि अधकि पवति्र है, वास्तव में, अल्लाह भली-भांति परचिति है उससे, जो कुछ वे कर रहे हैं। (क़ुरआन 24:30)

पुरुषों के पहनावे की भी शर्ते हैं, हालांकि इन्हे कभी-कभी अनदेखा कर दयिा जाता है या अच्छी तरह से नहीं समझा जाता है। कुछ शर्तें महलिाओं के शर्तो के समान हैं, लेकनि अन्य वशिेष रूप से पुरुषों से संबंधति हैं।

1.नाभि से घुटनों तक का शरीर का हस्सिा ढका होना चाहएि।

2.यह गैर-मुस्लिमों के विशिष्ट कपड़ों से मिलता-जुलता नहीं होना चाहिए। पश्चिमी कपड़े जो एक निश्चित समूह या संप्रदाय को नही दर्शाते हैं, उन्हें आमतौर पर अनुमति दी जाती है।

3.यह महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों से मिलता जुलता नहीं होना चाहिए।

4.यह टाइट या पारदर्शी नहीं होना चाहिए।

5.पुरुषों को रेशम से बने वस्त्र, या सोने से बने आभूषण पहनने की अनुमति नहीं है।

6.पुरुषों के लिए दो तरह के अलंकरण वर्जित हैं लेकिन महिलाओं के लिए इनकी अनुमति है। वे हैं, सोना और शुद्ध रेशम से बने वस्त्र।

इस्लाम के विद्वान पूर्ण रूप से सहमत हैं कि किसी के भी सामने पुरुषों की नाभि से घुटनों तक (घुटनों सहित) ढंका होना चाहिए। इसका एकमात्र अपवाद उसकी अपनी पत्नी है।

अंत में, पुरुषों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे ऐसे कपड़े न पहनें जो टखनों से नीचे हों।

अगले पाठ में हम अवराह की परिभाषा और अधिक बारीकी से समझेंगे और इस तथ्य पर चर्चा करेंगे कि अवराह के नियम स्थिति के अनुसार बदलते हैं।

फुटनोट:

[1] अबू दाऊद

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/135

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।